वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 418
ISBN-978-93-84003-06-7

चम्पापुर तीर्थ परिचय एवं पूजा

–प्रस्तुति –

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

जैनधर्म के 12वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य की पंचकल्याणक से पवित्र भूमि पर जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी चारित्रचन्द्रिका परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के पावन प्रेरणा से निर्मित 31 फुट उत्तुंग भगवान वासुपूज्य की पंचकल्याणकप्रतिष्ठा फाल्गुन कृ. 13 से फाल्गुन शु. 3 (27 फरवरी से 3 मार्च 2014) तक के शुभावसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	फाल्गुन शु. तृतीया, 3 मार्च 2014	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

अर्हन्तो मंगलं कुर्युः सिद्धाः कुर्युश्च मंगलम्।
आचार्याः पाठकाश्चापि साधवो मम मंगलम्।।

वर्तमान में सभी मनुष्यों का जीवन मंगलमयी हो, इसके लिए देवदर्शन, भगवान का अभिषेक, पूजन, भगवान की भक्ति, मण्डल विधानों का आयोजन मंगल साधन हैं। जिनेन्द्रदेव की भक्ति, स्तुति कर्मनिर्जरा में विशेष कारण हैं।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से दीक्षित जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य चारित्र चन्द्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं। पूज्य माताजी के करकमलों से दीक्षित प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माता जी हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं से साहित्य जगत को अलंकृत किया है। ग्रंथों का लेखन, अनुवाद, सम्पादन आदि करके जिनधर्म, जिनागम की प्रभावना की है।

श्रावण सुदी ग्यारस 17 अगस्त, सन् 2013 को पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का 25 वां रजत दीक्षा महोत्सव मनाया गया जिसमें पूज्य माताजी की कृतियों को, अद्भुत कार्य क्षमताओं को, उनकी प्रज्ञा बुद्धि को देखते हुए पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से संघस्थ साधुओं, विद्वद्वर्ग एवं समाज के द्वारा 'प्रज्ञा पुञ्ज' ग्रंथ को पूज्य माताजी के करकमलों में समर्पित किया गया।

वर्तमान में पूज्य चंदनामती माताजी के द्वारा जैन इन्साइक्लोपीडिया (जैन विश्व कोश) पर वृहत् स्तर पर कार्य किया जा रहा है। इसके अन्दर जैनधर्म, जिनागम-जिनवाणी, भजन, स्तुति, ज्ञान की बातें, साधुओं के परिचय, तीर्थ के परिचय आदि बहुत सी सामग्री उपलब्ध हैं, जिसे आप घर बैठे इन्टरनेट पर देखकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

पूज्य माताजी द्वारा प्रस्तुत यह 'चम्पापुरी तीर्थ परिचय एवं पूजा' सभी के लिए लाभकारी हो यही मंगल भावना है। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करे, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

-आर्यिका सुव्रतमती

चंपापुर में वसुपूज्य पिता, औ प्रसू जयावति इन्द्र नमित।
आसाढ़ वदी छठ को प्रभु ने, माँ गर्भ प्रवेश किया सुरनत।।
फाल्गुन वदि चौदस जन्म लिया, इस तिथि को ही जिनवेश धरा।
सित माघ द्वितीया के प्रभु को, केवल लक्ष्मी ने स्वयं वरा।।

जैनधर्म के 12वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य ने चम्पापुरी में जन्म लिया। वर्तमान काल की चौबीसी में भगवान वासुपूज्य ऐसे तीर्थंकर हैं जिनके पाँचों ही कल्याणक चम्पापुर में हुए हैं और पंचबालयति तीर्थंकर में प्रथम बालयति श्री वासुपूज्य भगवान हुए हैं।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी चारित्रचन्द्रिका परम पूज्य 105 गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रथम आर्यिका शिष्या प्रज्ञाश्रमणी पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने इस 'चम्पापुर तीर्थ परिचय एवं पूजा' पुस्तक तैयार करके दी है। इस पुस्तक में सर्वप्रथम भगवान वासुपूज्य की पंचकल्याणक भूमि चम्पापुर तीर्थ पूजा के बाद पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित वासुपूज्य भगवान की पूजा, पंचकल्याणक के अर्घ्य हैं। इसके बाद पूज्य चंदनामती माताजी द्वारा रचित मंगलग्रह अरिष्टनिवारक श्री वासुपूज्य भगवान की पूजा है। पूजा के बाद भगवान वासुपूज्य की एवं चम्पापुर तीर्थ की मंगल आरती है। पुनः पंचकल्याणक से सम्बन्धित एवं तीर्थ चम्पापुरी से सम्बन्धित कई एक भजन हैं।

चम्पापुरी में परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से, श्री विनोद सेठी डीमापुर परिवार के सौजन्य से भगवान वासुपूज्य की 31 फुट उत्तुंग विशाल जिनप्रतिमा का निर्माण हुआ है। जिनका पंचकल्याणक महोत्सव फाल्गुन वदी त्रयोदशी से फाल्गुन शु. तृतीया (27 फरवरी 2014) तक हो रहा है। इस उपलक्ष्य में समयोचित इस पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है, जो कि बहुत ही उपयोगी पुस्तक है।

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने भी 100 से अधिक ग्रंथों की रचना की है। पूजा, विधान, भजन, आरती, चालीसा आदि सभी रचनाएँ एक से एक बढ़कर एवं अत्यन्त भावपूर्ण हैं। पूज्य माताजी द्वारा रचित

णमोकार चालीसा, सम्मेदशिखर टोंक वन्दना तो जन–जन के लिए अति ही प्रिय रचना हो गई है। चम्पापुरी तीर्थ पूजा में सुन्दर भावों के साथ पूज्य माताजी ने लिखा है–

चम्पापुर नगरी वासुपूज्य के जन्म से धन्य हुई है
चम्पापुर नगरी.....
जिन शासन के बारहवें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य स्वामी।
उनके पाँचों कल्याणक से, चम्पापुर की धरती नामी।।
वसुपूज्य पिता के साथ जयावति माता धन्य हुई हैं।।
चम्पापुर नगरी.....

जयमाला में वासुपूज्य भगवान का पूरा जीवन परिचय समाहित है। जब तीर्थंकर वासुपूज्य का जन्म हुआ तब सौधर्म इन्द्र का आसन कम्पित हुआ और उसने इन्द्राणी सहित एवं देवपरिकर सहित चम्पापुरी नगरी में आकर जन्मकल्याणक का खूब उत्सव मनाया, धनकुबेर ने रत्नों की वृष्टि की और फिर सुमेरु पर्वत पर ले जाकर 1008 कलशों से न्वहन करके दिव्य वस्त्राभूषण पहनाकर वासुपूज्य यह नामकरण किया। भगवान बचपन में देव बालकों के साथ क्रीड़ा करते थे। भगवान के वस्त्राभूषण स्वर्ग से आते थे। भगवान के बाल्यकाल का वर्णन अद्वितीय है। युवावस्था में भगवान ने माता पिता के कहने पर भी विवाह नहीं किया, बाल ब्रह्मचारी रहकर तप करके घातिया कर्मों का नाशकर केवलज्ञान को प्रगट किया और फिर अघातिया कर्मों का भी नाशकर मोक्षधाम को प्राप्त कर लिया। चम्पापुर के निकट ही मंदारगिरि पर्वत है, जहाँ से भगवान मोक्ष गए। ये दोनों ही वर्तमान में भगवान वासुपूज्य के तीरथ हैं। भगवान के पंचकल्याणक से पवित्र चम्पापुरी तीर्थ की वन्दना सभी को अवश्य करना चाहिए।

''चम्पापुरी तीर्थ परिचय एवं पूजा'' सभी के लिए मंगलकारी हो। पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

दो शब्द

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

चम्पापुरी इक मात्र ऐसा तीर्थ है पावन।
जहाँ वासुपूज्य प्रभु के हुए पाँचों कल्याणक।।
चम्पापुरी में माना मंदारगिरि स्थल।
पूजूँ जहाँ प्रसिद्ध वासुपूज्य धर्मस्थल।।

भगवान महावीर के शासन में जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना करने वाली जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं। माताजी की शिष्या एवं गृहस्थावस्था की छोटी बहन पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी हैं जिन्होंने पूज्य माताजी के पद चिन्हों पर चलते हुए पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से अनेक पूजा विधान, भजन, चालीसा, आरती आदि की रचना की है। षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ की सिद्धान्तचिन्तामणि संस्कृत टीका की हिन्दी टीका की है। समयसार ग्रंथ का पद्यानुवाद किया है। पूज्य माताजी द्वारा रचित 'महावीर स्तोत्र' पर संस्कृत-हिन्दी दोनों टीका लिखी है। नवग्रह शांति विधान, भक्तामर विधान, मनोकामनासिद्धि विधान, सोलहकारण विधान, दशलक्षण विधान आदि विधानों की रचना की है। सभी पूजा विधानों में शब्द सौष्ठव इतने सुन्दर हैं कि पूजा पढ़ने में आनन्द आ जाता है।

मैं अपना परम सौभाग्य मानती हूं कि मुझे पूज्य माताजी के कुल में जन्म लेने का (गृहस्थावस्था की भान्जी) होने का अवसर प्राप्त हुआ है। पूज्य माताजी के चरण सानिध्य में 30 वर्षों से रहते हुए, ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करते हुए वैयावृत्ति, स्वाध्याय करते हुए मैंने अपने जीवन को सार्थक किया है। पूज्य माताजी से मैं यही प्रार्थना करती हूं कि मुझे भी शीघ्र ही स्त्री पर्याय का छेद करने वाली एवं संसार समुद्र को पार करने वाली आर्यिका दीक्षा प्राप्त हो। पूज्य माताजी के दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए मैं पूज्य माताजी के चरणों में कोटि–कोटि नमन करती हूँ।

श्री ज्ञानमती मात की शिष्या तुम्हें नमन।
तुम बाल ब्रह्मचारिणी माता तुम्हें नमन।।
निज नाम के अनुरूप गुण को धारती हो तुम।
मृदुता व सरलता गुणों से सहित मात तुम।।

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका

श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नाम – प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम – ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि – 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान – टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता – श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई – चार (कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी, कैलाशचंद, स्वप्रकाशचंद, सुभाषचंद)

बहन – आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

ब्रह्मचर्य व्रत – 25 अक्टूबर 1969 को जयपुर में 2 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत एवं सन् 1971, अजमेर में आजन्म ब्रह्मचर्य सुगंधदशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

धार्मिक अध्ययन – 1972 में सोलापुर से ''शास्त्री'' की उपाधि, 1973 में ''विद्यावाचस्पति'' की उपाधि।

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत – सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

आर्यिका दीक्षा – हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. 11 को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से।

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि – 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

पीएच.डी. की मानद उपाधि – तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को विश्वविद्यालय में।

साहित्यिक योगदान – चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान, समयसार विधान आदि 150 से अधिक पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा ''षट्खण्डागम (प्राचीनतम जैन सूत्र ग्रंथ) एवं ''भगवान ऋषभदेव चरितम्'' की संस्कृत टीकाओं का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' का हिन्दी पद्यानुवाद, भगवान महावीर स्तोत्र की संस्कृत एवं हिन्दी टीका, भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोष, जैन वर्शिप (अंग्रेजी में पूजा, भजन, बारहभावना आदि), भजन (लगभग 1000), पूजन, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ एवं भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका। वर्तमान में 'इन्साइक्लोपीडिया ऑफ जैनिज्म डॉट कॉम' (ऑनलाईन जैन विश्वकोश) के सम्पादन में संलग्न।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है- कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism. com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जीतीर्थ पर ''आचार्य श्री शांतिसागर धाम'' का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

तीर्थंकर वासुपूज्य जन्मभूमि एवं उनके पंचकल्याणकों से पावन

चम्पापुर तीर्थ का परिचय

चम्पापुर भारत की प्राचीन सांस्कृतिक नगरियों में से है। भगवान ऋषभदेव की आज्ञा से इन्द्र ने जिन 52 जनपदों की रचना की थी, उनमें एक अंग जनपद भी था जिसकी राजधानी चम्पानगरी मानी जाती है। बारहवें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य की जन्मभूमि होने का तो इसे सौभाग्य प्राप्त है ही, किन्तु यहाँ उनके पाँचों कल्याणक भी हुए हैं इसलिए यह पावन सिद्धक्षेत्र भी कहलाता है। किसी तीर्थंकर के पाँचों कल्याणक एक ही जगह होने का इतिहास मात्र चम्पापुर में ही मिलता है, अन्यत्र कहीं नहीं।

राजा वसुपूज्य एवं रानी जयावती से फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी के दिन तीर्थंकर वासुपूज्य का जन्म हुआ था। पाँच बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकरों में से वासुपूज्य भगवान प्रथम बालयति हुए हैं जिन्होंने विवाह न करके संसार से वैरागी होकर दीक्षा धारण कर ली थी। इनके पूर्व के ग्यारह तीर्थंकरों में से सभी ने विवाह करके राज्य संचालन करने के पश्चात् दीक्षा धारण की थी।

भगवान वासुपूज्य ने चम्पापुर के मनोहर उद्यान में जाकर जिनदीक्षा ग्रहण की थी और वहीं उनको केवलज्ञान एवं मोक्ष हुआ जो आजकल मन्दारगिरि के रूप में माना जाता है। यह मन्दारगिरि उस काल में चम्पानगरी के ही बाह्य उद्यान का पर्वत था अतः चम्पापुर में ही सम्मिलित था। इस विषय में उत्तरपुराणग्रंथ की मान्यता यह है कि वासुपूज्य भगवान के गर्भ और जन्मकल्याणक चम्पानगरी में मनाए गए और मन्दारगिरि के मनोहर उद्यान में दीक्षा एवं ज्ञान कल्याणक हुए तथा मंदारगिरि से ही भगवान ने निर्वाण पद प्राप्त किया था।

उत्तरपुराण में वर्णन है–

स तैः सह विहृत्याखिलार्यक्षेत्राणि तर्पयन्।
धर्मवृष्ट्या क्रमात्प्राप्य चम्पामब्दसहस्रकम् ।।50।।

स्थित्वाऽत्र निष्क्रियं मासं नद्याराजतमालिका-।
सञ्ज्ञायाश्चित्तहारिण्याः पर्यन्तावनिवर्तिनि।।51।।
अग्रमन्दरशैलस्य सानुस्थानविभूषणे।
वने मनोहरोद्याने पल्यंकासनमाश्रितः।।52।।
मासे भाद्रपदे ज्योत्स्नाचतुर्दश्यापराण्हके।
विशाखायां ययौ मुक्तिं चतुर्णवतिसंयतैः।।53।।

अर्थात् भगवान ने इन सबके (मुनि, आर्यिका आदि) साथ समस्त आर्यक्षेत्रों में विहार कर उन्हें धर्मवृष्टि से संतृप्त किया और क्रम-क्रम से चम्पानगरी में आकर एक हजार वर्ष तक रहे। जब आयु में एक मास शेष रह गया तब योग निरोध कर रजतमालिका नामक नदी के किनारे की भूमि पर वर्तमान मन्दारगिरि के शिखर को सुशोभित करने वाले मनोहर उद्यान में पर्यंकासन से स्थित हुए तथा भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी के दिन सायंकाल के समय विशाखा नक्षत्र में चौरानवे मुनियों के साथ मुक्ति को प्राप्त हुए।

वर्तमान में मन्दारगिरि चम्पापुर से लगभग 50 किमी. दूर अवस्थित है, सभी तीर्थयात्री दर्शन करने के लिए बड़ी श्रद्धा से वहाँ जाते हैं।

चम्पापुर तीर्थ भागलपुर रेलवे स्टेशन से तीन किलोमीटर दूर नाथनगर में पड़ता है। जयपुर के हवामहल की शैली पर बने क्षेत्र का अप्रतिम विशाल भव्य द्वार आगत श्रद्धालुओं और भक्तों का स्वागत करता है। मंदिर के पूर्व भाग में सहस्राब्दियों पुराने दो प्राचीन कीर्तिस्तंभ विद्यमान हैं। कहते हैं कि इन स्तंभों के नीचे से सुरंग मंदारगिरि तथा सम्मेदशिखर जी की चन्द्रप्रभ टोंक तक जाती थी। ऐसे ही दो स्तम्भ मंदिर के पूर्वभाग में थे जो कालक्रम में नष्ट हो गये।

आदिकाल से ही चम्पापुर अनेकानेक महत्वपूर्ण घटनाओं एवं ऐतिहासिक कथानकों का इतिहास अपने अन्दर में संजोए हुए है, जिसके कारण चम्पापुर का कण-कण पवित्र एवं पूजनीय है।

यहाँ मंदिर की मूलवेदी में भगवान वासुपूज्य की लाल माणिक्य वर्ण की अति मनोज्ञ पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। इसी मूलवेदी में एक अष्टधातु की मूर्ति तथा भगवान वासुपूज्य के प्राचीन चरण भी विराजमान हैं। चार कोनों पर चार वेदी बनी हुई हैं उनमें श्वेत पाषाण एवं अष्टधातु की मनोहारी प्रतिमाएं हैं। मूलमंदिर की परिक्रमा के बाहर दक्षिण की ओर के मंदिर में दो से चार हजार वर्ष पुरानी कुशाणकालीन, गुप्तकालीन एवं पालयुगीन प्रतिमाएं पुरातत्व

की धरोहर के रूप में स्थापित हैं। पास में ही एक अन्य वेदी में लालवर्ण की वासुपूज्य भगवान की एक फुट उत्तुंग पद्मासन प्रतिमा विराजमान हैं।

भगवान महावीर स्वामी के 2500वें निर्वाण महोत्सव के पश्चात् चम्पापुर तीर्थ के नये कार्यकर्ताओं ने इस तीर्थ का अच्छा विकास और उद्धार किया है। नये जिनमंदिरों में एक ओर विदेह क्षेत्र में विद्यमान प्रथम तीर्थंकर सीमन्धर स्वामीका समवसरण मंदिर है तो दूसरी ओर काँच का भव्य कलात्मक मंदिर है।

मंदिर जी के पूर्व में मूलवेदी के सम्मुख 71 फुट उत्तुंग गगनचुम्बी मानस्तंभ है, मानस्तंभ के तीनों ओर 24 तीर्थंकरों की 24 टोंक है। शुरू में भगवान बाहुबली का जिनालय एवं अंतिम में भगवान वासुपूज्य के प्रथम शिष्य "मन्दर" गणधर की चरणपादुका हैं। इसी अहाते में भगवान शांतिनाथ जिनमंदिर, भगवान महावीर जिनमंदिर एवं ध्यानस्थ मुद्रा में खड़े भगवान पार्श्वनाथ की सात फणों के सर्प वाली काले पाषाण की प्रतिमा वाला रमणीय काँच मंदिर है। इसी के पार कृत्रिम नहर से घिरे भव्य जलमंदिर में भगवान वासुपूज्य की दस टन वजन वाली सवा पन्द्रह फुट खड्गासन प्रतिमा विशाल कमल पर विराजमान है।

वर्तमान में चम्पापुर तीर्थ पर श्रीमती सोना देवी सेठी की स्मृति में उनके पति श्री विनोद जी सेठी तथा पुत्र दिवस, जैन आनंद जैन सेठी ने भगवान वासुपूज्य की 31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा विराजमान करके महान पुण्य अर्जन के साथ-साथ तीर्थ को अमूल्य निधि प्रदान की है।

तीर्थयात्रियों के लिए आधुनिक सुविधा सम्पन्न धर्मशाला है। जनहित में विद्यालय, चिकित्सालय एवं वाचनालय है। इस मंदिर के सामने एक बीसपंथी मंदिर मूलनायक भगवान वासुपूज्य का है। वहाँ भी आवास आदि की समुचित सुविधाएँ हैं।

तीर्थंकर वासुपूज्य के पाँचों कल्याणकों से पावन तीर्थ चम्पापुर एवं मन्दारगिरि सिद्धक्षेत्र को मेरा शत-शत नमन।

-आर्यिका चन्दनामती

चम्पापुरी तीर्थ पूजा

तर्ज-मेरे देश की धरती.....

चम्पापुर नगरी वासुपूज्य के जन्म से धन्य हुई है,
चम्पापुर नगरी.....।।टेक.।।
जिनशासन के बारहवें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य स्वामी।
उनके पाँचों कल्याणक से, चम्पापुर की धरती नामी।।
वसुपूज्य पिता के साथ जयावति माता धन्य हुई है।।
चम्पापुर.।।1।।
उस चम्पापुर तीरथ का मैं, आह्वानन स्थापन कर लूँ।
सन्निधीकरण कर वासुपूज्य, प्रभु को मन में धारण कर लूँ।।
इस पूजा विधि से पूजनसामग्री भी धन्य हुई है।।
चम्पापुर.।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (शंभु छन्द)

जीवात्मा एवं कर्मों का, सम्बन्ध अनादीकाल से है।
बस इसीलिए जीवन व मरण, हो रहा अनादीकाल से है।।
अब जन्मजरामृतिनाश हेतु, जल से प्रभु का अर्चन कर लूँ।
प्रभु वासूपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुरि का वंदन कर लूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यादर्शन के कारण जीव, अनादी से भव भ्रमण करें।
सम्यग्दर्शन यदि मिल जावे, तब ही उसका उपशमन करे।।
भव आतप के विध्वंस हेतु, चंदन से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षणिक विनश्वर पद प्राप्ती, के लिए सदा अन्याय यहाँ।
आत्मा का लाभ न ले पाया, है अविनश्वर साम्राज्य जहाँ।।
अब अक्षय पद पाने हेतू, अक्षत से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस कामदेव के वश होकर, सच्चे सुख को सब भूल रहे।
जिनराज उसी को वश में कर, आतम अमृत में डूब रहे।।
उस कामबाण के नाश हेतु, पुष्पों से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षुधावेदनी कर्म सभी के, संग अनादि से लगा हुआ।
उसके ही तीव्र उदय होने पर, नहिं अभक्ष्य का भान रहा।।
वह क्षुधारोग विध्वंस हेतु, नैवेद्य से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों में मोहकर्म, सबसे बलवान कहा जाता।
उससे निजरूप न दिखे अतः, वह अंधकार माना जाता।।

अब मोहतिमिर के नाश हेतु, दीपक से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों के नाश हेतु, जिनराज तपस्या करते हैं।
क्रमशः उनके नाशन हेतू, श्रावकजन पूजा करते हैं।।
उन कर्मों की उपशांति हेतु, पूजन में धूप दहन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैंने अनादि से इस जग में, ग्रैवेयक तक फल प्राप्त किया।
लेकिन सम्यक्चारित्र बिना, नहिं मुक्ति योग्य फल प्राप्त किया।।
अब मोक्षमहाफल प्राप्ति हेतु, फल से प्रभु की पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमुक्ता आदि मिला करके, मैं अर्घ्य सजाकर ले आया।
''चन्दनामती'' प्रभु पूजन कर, चाहूँ तीरथ पद की छाया।।
अब पद अनर्घ्य की प्राप्ति हेतु, मैं अर्घ्य चढ़ा प्रणमन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

गंगनदी का नीर ले, डालूँ जल की धार।
देश राष्ट्र में शांति हो, मन में यही विचार।।

शान्तये शांतिधारा

चम्पापुर उद्यान से, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, मन में अति हरषाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः

चम्पापुर तीर्थ के अर्घ्य

-शेर छंद-

भगवान वासुपूज्य जहाँ गर्भ में आये।
आषाढ़ कृष्णा छठ तिथी सुरगण वहाँ आये।।
माता जयावती पिता वसुपूज्य का आँगन।
रत्नों से भर गया करूँ उस भूमि का यजन।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथगर्भकल्याणकपवित्रचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश जहाँ प्रभु का जन्म हुआ।
स्वर्गों में सुरपती का मुकुट स्वयं झुक गया।।
चम्पापुरी नगरी की पूज्यता है इसलिए।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ उस भू को इसलिए।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मकल्याणकपवित्रचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश को ही वैराग्य हुआ था।
प्रभु जी ने स्वयं दीक्षा स्वीकार लिया था।।
उस दीक्षाकल्याणक पवित्र भूमि को नमन।
मंदारगिरि उद्यान का है भाव से अर्चन।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रचम्पापुरीनिकटस्थ-मंदारगिरितीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ माघशुक्ला दुतिया को ज्ञान हो गया।
जिनवर के घातिकर्म का विनाश हो गया।।

मंदारगिरि का पूज्य वह उद्यान मनोहर।
पूजूँ समवसरण का स्थल वह मनोहर।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रचम्पापुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों सुदी चौदश को प्रभू मोक्ष पा गये।
सम्पूर्ण कर्म नाश अचल सौख्य पा गये।।
निर्वाण कल्याणक मनाने इन्द्र आ गये।
मंदारगिरि जजूँ जहाँ से सिद्धि पा गये।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथमोक्षकल्याणकपवित्रचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-

चम्पापुरी इक मात्र ऐसा तीर्थ है पावन।
जहाँ वासुपूज्य प्रभु के हुए पाँचों कल्याणक।।
चम्पापुरी में माना मंदारगिरि स्थल।
पूजूँ जहाँ प्रसिद्ध वासुपूज्य धर्मस्थल।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथगर्भजन्मतपकेवलज्ञानमोक्षपंचकल्याणक-पवित्रचम्पापुरी-मंदारगिरितीर्थक्षेत्राभ्यां पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं चम्पापुरीजन्मभूमिपवित्रीकृत-श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

-दोहा-

धर्मतीर्थ वर्तन जहाँ, हुआ वही है तीर्थ।
नमन करूँ उस तीर्थ को, पाऊँ आतम कीर्ति।।1।।

-नरेन्द्र छन्द-

चम्पापुर नगरी में नृप वसुपूज्य राज्य करते थे।
न्यायनीति में दक्ष प्रजा का न्याय किया करते थे।।

धर्मपरायण श्रावक वे प्रभु भक्ति सदा करते थे।
षट्कर्तव्यों में रत रहकर शिवपथ पर चलते थे।।2।।

कर विवाह गुणयुक्त जयावती रानी को वर लाये।
सांसारिक सुख भोग मनोहर जीवनकाल बितायें।।
एक दिवस देवों की टोली ले धनपति वहाँ आये।
रत्नवृष्टि कर इन्द्राज्ञा से नगरी खूब सजाये।।3।।

जान गये तब राजा रानी तीर्थंकर आएंगे।
छः महीने पश्चात् गर्भकल्याणक मनवाएंगे।।
खुशियों में कैसे बीते छह माह पता नहिं पाया।
आखिर इक रात्री में रानी को सपना हो आया।।4।।

सोलह सपनों के फल में वसुपूज्य ने यह बतलाया।
इक तीर्थंकर बालक रानी तेरे गरभ में आया।।
खुशियों में डूबी रानी अपने महलों में रहतीं।
दिक्कुमारियाँ सेवा में आ उनसे प्रश्न उचरतीं।।5।।

धीरे-धीरे बीत गये नव मास घड़ी वह आई।
तीर्थंकर का जन्म हुआ वहाँ बजने लगी बधाई।।
जन्मकल्याणक का उत्सव इन्द्रों ने आन मनाया।
वासुपूज्य यह नामकरण तीर्थंकर शिशु ने पाया।।6।।

वस्त्राभूषण दिव्य पहन प्रभु पलने में झूले थे।
क्रमशः घुटने के बल चलकर देवों संग घूमे थे।।
उनकी मीठी और तोतली बोली जब माँ सुनती।
मानो जग की सारी निधियाँ उनको फीकी लगतीं।।7।।

तीर्थंकर के बाल्यकाल का वर्णन कैसे करना।
इन्द्रपुरी के सुख भी उनके आगे तुच्छ ही कहना।।
बचपन से यौवन काया को वासुपूज्य ने पाया।
मात-पिता के कहने पर भी ब्याह नहीं रचवाया।।8।।

बालयती बन तप करके कैवल्यज्ञान उपजाया।
घाति अघाती कर्म नाश कर मोक्षधाम प्रगटाया।।

चम्पापुर उनके पाँचों कल्याणक से पावन है।
वहीं निकट मंदारगिरी चम्पापुरि का पर्वत है।।9।।

वर्तमान में ये दोनों प्रभु वासुपूज्य के तीरथ।
भव्यात्माओं को दर्शन से प्रगटाते मुक्तीपथ।।
इसीलिए चम्पापुर तीरथ की जयमाल बनाई।
वासुपूज्य तीर्थंकर की पूजन में इसे चढ़ाई।।10।।

एक यही इच्छा है मेरी जन्मभूमि अर्चन में।
रत्नत्रय निधि को पाकर कर पाऊँ जन्म सफल मैं।।
बस तब तक ''चंदनामती'', पूजन का भाव रहेगा।
पूज्य न जब तक बन जाऊँ, प्रभु नाम हृदय में रहेगा।।11।।
मेरा यह पूर्णार्घ्य समर्पण, चम्पापुर तीरथ को।
है पवित्र जिस भू का कण कण, नमन है उसकी रज को।।
दुःखों का क्षय हो प्रभु! मेरे, कर्मों का भी क्षय हो।
मरण समाधीयुत हो जिससे, मेरा सुख अक्षय हो।।12।।

-दोहा-

तीर्थंकर अरु तीर्थ का, प्रस्तुत यह गुणगान।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं चहूँ, स्वातम में विश्राम।।13।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

-गीता छन्द-

जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमि को नमें।
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चंदनामति'' आएंगे।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

भगवान श्री वासुपूज्य जिनपूजा

-गणिनी ज्ञानमती

अथ स्थापना –गीता छंद

श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र वासव-गणों से पूजित सदा।
इक्ष्वाकुवंश दिनेश काश्यप-गोत्र पुंगव शर्मदा।।
सप्तर्द्धिभूषित गणधरों से, पूज्य त्रिभुवन वंद्य हैं।
आह्वान कर पूजूँ यहाँ, मिट जायेगा भव फंद है।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक –गीता छंद

हे नाथ! जग में जन्म व्याधी, बहुत ही दुख दे रही।
अब मेट दीजे इसलिए, त्रयधार दे पूजूँ यहीं।।
श्री वासुपूज्य जिनेंद्र द्वादश, तीर्थकर्ता सिद्ध हैं।
सौ इन्द्र वंदित पद कमल, संपूर्ण सिद्धि निमित्त हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! इस यमराज का, संताप अब नहिं सहन है।
इस हेतु तुम पादाब्ज में, चर्चूं सुगंधित गंध है।।श्री.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! मेरे ज्ञान के, बहु खंड-खंड हुए यहाँ।
कर दो अखंडित ज्ञान तंदुल, पुंज से पूजूँ यहाँ।।श्री.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! भवशर विश्वजेता, आप ही इसके जयी।
इस हेतु तुम पादाब्ज में, बहु पुष्प अर्पूं मैं यहीं।।श्री.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! त्रिभुवन अन्न खाया, भूख अब तक ना मिटी।
प्रभु भूख व्याधी मेट दो, इस हेतु चरु अर्पूं अभी।।श्री.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्न दीपक से कभी, मन का अंधेरा ना भागा।
हे नाथ! तुम आरति करत ही, ज्ञान का सूरज उगा।।
श्री वासुपूज्य जिनेंद्र द्वादश, तीर्थकर्ता सिद्ध हैं।
सौ इन्द्र वंदित पद कमल, संपूर्ण सिद्धि निमित्त हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! मेरे कर्म कैसे, भस्म हों यह युक्ति दो।
मैं धूप खेऊँ अग्नि में, ये कर्म बैरी भस्म हों।।श्री.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! चाहा बहुत फल, बहुते चरण में नत हुआ।
नहिं तृप्ति पायी इसलिए, फल सरस तुम अर्पण किया।।श्री.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! निज के रत्नत्रय, अनमोल श्रेष्ठ अनर्घ हैं।
मुझको दिलावो ''ज्ञानमति'', इस हेतु अर्घ्य समर्प्य है।।श्री.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

वासुपूज्य चरणाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले निजातम स्वाद, तिहुँजग में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार, जिनपद पुष्पांजलि करूँ।
भरें सौख्य भंडार, रोग शोक संकट टलें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–गीताछंद –

दिव महाशुक्र विमान से, च्युत हो प्रभू चंपापुरी।
वसुपूज्य पितु माता जयावति, गर्भ आये शुभ घरी।।

आषाढ़ कृष्णा छठ तिथी, सुरवृंद माँ पितु को जजें।
हम गर्भ कल्याणक जजत, संपूर्ण दुःखों से छुटें।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठ्यां श्रीवासुपूज्यजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश तिथी, सुरगृह स्वयं बाजे बजे।
जन्में जिनेश्वर उसी क्षण, सुरपति मुकुट भी थे झुके।।
माँ के प्रसूती सद्म जा, शचि ने शिशू को ले लिया।
सुर शैल पर अभिषव हुआ, पूजत जगत भव कम किया।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीवासुपूज्यजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश तिथी, वैराग्य मन में आ गया।
सुर पालकी पे प्रभु चढ़े, लौकांतिसुर स्तुति किया।।
इन्द्राणि निर्मित चौक पर, तिष्ठे स्वयं दीक्षा लिया।
प्रभु तप कल्याणक पूजते, मिल जाय जिन दीक्षाप्रिया।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीवासुपूज्यजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन मनोहर में तरु कदंबक, तले प्रभु थे ध्यान में।
शुभ माघ शुक्ला द्वितीया, प्रभु केवली भास्कर बनें।।
धनदेव निर्मित समवसृति में, गंधकुटि में शोभते।
द्वादशसभा में भव्य नमते, हम प्रभू को पूजते।।4।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वितीयायां श्रीवासुपूज्यजिनज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों सुदी चौदश तिथी, चंपापुरी से नाथ ने।
संपूर्ण कर्म विनाश कर, शिव वल्लभा के पति बने।।
सौधर्म इन्द्र सुरादिगण, हर्षित हुए वंदन करें।
हम वासुपूज्य जिनेन्द्र की, निर्वाण पूजा को करें।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां श्रीवासुपूज्यजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

वासुपूज्य त्रिभुवन नमित, इन्द्रगणों से वंद्य।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के, पाऊँ सौख्य अमंद।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

दोहा – **घाति चतुष्टय घात कर, प्रभु तुम हुये कृतार्थ।**
नव केवल लब्धी रमा, रमणी किया सनाथ।।1।।

–शेरछंद –

प्रभु दर्शमोहनीय को निर्मूल किया है।
सम्यक्त्व क्षायिकाख्य को परिपूर्ण किया है।।
चारित्र मोहनीय का विनाश जब किया।
क्षायिक चरित्र नाम यथाख्यात को लिया।।2।।

संपूर्ण ज्ञानावर्ण का जब आप क्षय किया।
कैवल्य ज्ञान से त्रिलोक जान सब लिया।।
प्रभु दर्शनावरण के क्षय से दर्श अनंता।
सब लोक औ अलोक देखते हो तुरंता।।3।।

दानांतराय नाश के अनंत प्राणि को।
देते अभय उपदेश तुम शिवपथ का दान जो।।
लाभान्तराय का समस्त नाश जब किया।
क्षायिक अनंतलाभ का तब लाभ प्रभु लिया।।4।।

जिससे परमशुभ सूक्ष्म दिव्य नंत वर्गणा।
पुद्गलमयी प्रत्येक समय पावते घना।।
जिससे न कवलाहार हो फिर भी तनू रहे।
शिवप्राप्त होने तक शरीर भी टिका रहे।।5।।

भोगांतराय नाश के अतिशय सुभोग हैं।
सुरपुष्पवृष्टि गंध उदकवृष्टि शोभ हैं।।
पग के तले वरपद्म रचें देवगण सदा।
सौगंध्य शीतपवन आदि सौख्य शर्मदा।।6।।

उपभोग अन्तराय का क्षय हो गया जभी।
प्रभु सातिशय उपभोग को भी पा लिया तभी।।
सिंहासनादि छत्र चंवर तरु अशोक हैं।
सुर दुंदुभी भाचक्र दिव्यध्वनि मनोज्ञ हैं।।7।।

वीर्यान्तराय नाश से आनत्य वीर्य है।
होते न कभी श्रांत आप धीर वीर हैं।।
प्रभु चार घाति नाश के नव लब्धि पा लिया।
आनन्त्य ज्ञान आदि चतुष्टय प्रमुख किया।।8।।

श्रीधर्म आदि छ्यासठ गणधर गुरू रहें।
मुनिराज बाहत्तर हजार ध्यानरत कहें।।
इक लाख छह हजार 'सेना' आदि आर्यिका।
दो लाख कहें श्रावक चउलाख श्राविका।।9।।

सत्तर धनुष उत्तुंग देह महिष चिह्न है।
आयू बहत्तर लाख वर्ष लाल वर्ण है।।
फिर भी तो निराकार वर्ण आदि शून्य हो।
आनन्त्य काल तक तो सिद्ध क्षेत्र में रहो।।10।।

प्रभु आप सर्व शक्तिमान कीर्ति को सुना।
इस हेतु से ही आज यहाँ मैं दिया धरना।।
अब तारिये न तारिये यह आपकी मरजी।
बस ''ज्ञानमती'' पूरिये यदि मानिये अरजी।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

वासुपूज्य भगवंत के, गुण अनंत अविकार।
जजते ही भव अंत हो, मिले आत्म गुण सार।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

मंगलग्रह अरिष्ट निवारक

श्री वासुपूज्य तीर्थंकर पूजा

-स्थापना-दोहा-

वासुपूज्य जिनराज की, करूँ थापना आज।
मंडल पर तिष्ठो प्रभो, पूरो मेरे काज।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारकश्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारकश्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारकश्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अष्टक-शंभुछंद

जल का स्वभाव है शीतलता, यह जगप्रसिद्ध अनुभव माना।
उस शीतलता की प्राप्ति हेतु, जल से धारा करने आना।।
श्रीवासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।1।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारकश्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन इक है ऐसा पदार्थ, जिसमें भुजंग विष व्याप्त न हो।
उस चन्दन को ही लाया मैं, जिससे आत्मिक संताप न हो।।
श्रीवासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगल ग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।2।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक-श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद प्राप्ती के प्रतीक में, अक्षत प्रस्तुत द्रव्य मेरा।
हे प्रभु! मुझको वह पद दे दो, जिससे हो प्रकट स्वभाव मेरा।।

श्री वासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।3।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक-श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जो फूल सदा विकसित होकर, उपवन को करें सुशोभित हैं।
वे प्रभुचरणों में चढ़कर और, अधिक हो गये सुगंधित हैं।।
श्रीवासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।4।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक-श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सरस मधुर पकवानों से, हम तन की क्षुधा मिटाते हैं।
उनको प्रभु निकट चढ़ाने से, तन रोग स्वयं नश जाते हैं।।
श्री वासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।5।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक-श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के दीप धरातल का, अंधियारा दूर किया करते।
घृतदीपक से प्रभु आरति कर, हम मन का तिमिर दूर कर लें।।
श्रीवासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।6।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक-श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले छैलछबीला अगर तगर, चंदन में कूट मिलाया है।
कर्मों के दहन हेतु मैंने, अग्नी में उसे जलाया है।।
श्री वासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।7।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक-श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम छुहारा लौंग आदि, उत्तम फल थाली में भरके।
जिनवर के सम्मुख भेंट करूँ, मनवाञ्छित सौख्य तभी मिलते।।
श्री वासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।8।।

ॐ ह्री मंगलग्रहारिष्टनिवारक-श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल से फल तक ले अष्टद्रव्य, प्रभु वासुपूज्य अर्चना करूँ।
"चन्दना" अनघ फल प्राप्ति हेतु, जिनवर पद शत वन्दना करूँ।।
श्री वासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।9।।

ॐ ह्री मंगलग्रहारिष्टनिवारक-श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरणों में धारा करने से, शाश्वत शांती मिल सकती है।
सांसारिक क्षणिक सुखों में नहिं, वैसी शांती मिल सकती है।।
श्री वासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।10।।

शान्तये शांतिधारा।

जीवन बगिया में प्रभु भक्ती से, ही बहार आ सकती है।
पुष्पांजलि के द्वारा आत्मा में, सुरभि स्वयं आ सकती है।।
श्रीवासुपूज्य भगवान् मेरी, मंगलग्रह बाधा दूर करो।
तन मन का मंगल कर मुझमें, आध्यात्मिक शक्ती पूर्ण भरो।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

-पूर्णार्घ्य-

तर्ज-आओ बच्चों.....

आवो हम सब करें अर्चना, वासुपूज्य भगवान की।।
मंगलग्रह की बाधानाशक, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।टेक.।।

काल अनादी से कर्मों का, ग्रह आत्मा के संग लगा।
आत्मनिधी को भी न ''चन्दना'', स्वयं जीव कर प्राप्त सका।।
इसीलिए अब पूजन कर लूँ, मिले राह निर्वाण की।
मंगलग्रह की बाधा नाशक, तीर्थंकर भगवान की।।1।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम् ।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक-श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारकश्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

-शंभुछंद -

हे वासुपूज्य देव! करूँ अर्चना तेरी।
हे वासुपूज्य देव! करूँ वन्दना तेरी।।
हे नाथ! पूर्ण कर दो, एक प्रार्थना मेरी।
मेरे अरिष्ट नष्ट हों, हो कामना पूरी।।1।।

कुछ पुण्य के संयोग से, मानव जनम मिला।
लेकिन अशुभ के योग से, कुल जैन न मिला।।
हे नाथ! पूर्ण कर दो, एक प्रार्थना मेरी।
मेरे अरिष्ट नष्ट हों, हो कामना पूरी।।2।।

जैनत्व भी मिला तो न, उपयोग कर सका।
जिनवाणी को सुना न उसे, मन में धर सका।।
हे नाथ! पूर्ण कर दो, एक प्रार्थना मेरी।
मेरे अरिष्ट नष्ट हों, हो कामना पूरी।।3।।

जब ज्ञान हुआ आपका, दरबार है सच्चा।
तब भक्तिभाव से शरण, लही करो रक्षा।।
हे नाथ! पूर्ण कर दो, एक प्रार्थना मेरी।
मेरे अरिष्ट नष्ट हों, हो कामना पूरी।।4।।

चम्पापुरी के राजा, श्रीवसुपूज्य धन्य थे।
माता जयावती के घर, में बरसे रत्न थे।।
हे नाथ! पूर्ण कर दो, एक प्रार्थना मेरी।
मेरे अरिष्ट नष्ट हों, हो कामना पूरी।।5।।

कल्याण करके अपना पुनः, जग को संवारा।
श्रीवासुपूज्य ने दिया, भव्यों को सहारा।।
हे नाथ! पूर्ण कर दो, एक प्रार्थना मेरी।
मेरे अरिष्ट नष्ट हों, हो कामना पूरी।।6।।

अब आपकी छाया से मुझे, शांति मिली है।
मेरे हृदय में ''चन्दनामति'', ज्योति जली है।।
हे नाथ! पूर्ण कर दो, एक प्रार्थना मेरी।
मेरे अरिष्ट नष्ट हों, हो कामना पूरी।।7।।

इस अर्घ्य थाल को करूँ, अर्पित मैं चरण में।
रक्षा करो अब ले लो प्रभु, अपनी ही शरण में।।
हे नाथ! पूर्ण कर दो, एक प्रार्थना मेरी।
मेरे अरिष्ट नष्ट हों, हो कामना पूरी।।8।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारकश्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

-दोहा-

वासुपूज्य वसुपूज्य सुत, वन्दन करूँ त्रिकाल।
तभी पूज्य बन आत्मा, होगी मालामाल।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

भगवान श्री वासुपूज्य की आरती

तर्ज–ॐ जय.....

ॐ जय वासुपूज्य स्वामी, प्रभु जय वासुपूज्य स्वामी।
पंचकल्याणक अधिपति-2, तुम अन्तर्यामी।।ॐ जय.।।

चंपापुर नगरी भी, धन्य हुई तुमसे।स्वामी धन्य.....
जयरामा वसुपूज्य तुम्हारे, मात पिता हरषे।।ॐ जय.।।1।।

बालब्रह्मचारी बन, महाव्रत को धारा। स्वामी महाव्रत.....
प्रथम बालयति जग ने, तुमको स्वीकारा।।ॐ जय.।।2।।

गर्भ जन्म तप एवं, केवलज्ञान लिया। स्वामी.....
चम्पापुर में तुमने, पद निर्वाण लिया।।ॐ जय.।।3।।

वासवगण से पूजित, वासुपूज्य जिनवर। स्वामी.....
बारहवें तीर्थंकर, है तुम नाम अमर।।ॐ जय.।।4।।

जो कोई तुमको सुमिरे, सुख सम्पति पावे।स्वामी.....
पूजन वंदन करके, वंदित हो जावे।।ॐ जय.।।5।।

घृत आरति ले हम सब, तुम आरति करते।स्वामी.....
उसका फल यह मिले चंदना-मती शुद्ध कर दे।।ॐ जय.।।6।।

भगवान श्री वासुपूज्य की जन्मभूमि

चम्पापुर तीर्थ की आरती

तर्ज–चांद मेरे आ जा रे .....

तीर्थ की आरति करते हैं-2
वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर को जजते हैं।।टेक.।।

प्राचीन संस्कृति की ये, दिग्दर्शक मानी जाती ।
हुआ धर्मतीर्थ का वर्तन, शास्त्रों में गाथा आती ।।

धरा वह पावन नमते हैं-2
वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर को जजते हैं।।1।।

वसुपूज्य वहां के राजा, उनकी थीं जयावती रानी।
उनकी पावन कुक्षी से, जन्मे थे अन्तर्यामी ।।
जन्म की वह तिथि भजते हैं-2
वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर को जजते हैं।।2।।

बचपन से यौवन काया, प्रभु वासुपूज्य ने पाया।
पर नहीं फंसे विषयों में, अरु बालयती पद पाया।।
दीक्षा की वह तिथि नमते हैं-2
वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर को जजते हैं।।3।।

चम्पापुर के ही निकट में, मंदारगिरी पर्वत है।
दीक्षा व ज्ञान से पावन, निर्वाणक्षेत्र भी वह है।।
सिद्धभूमी को भजते हैं-2
वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर को जजते हैं।।4।।

हैं वर्तमान में दोनों प्रभु वासुपूज्य के तीरथ।
हर भव्यात्मा को दर्शन, से प्रकटाते मुक्तीपथ।।
मुक्ति हेतू हम यजते हैं-2
वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर को जजते हैं।।5।।

मन्दिर की मूल वेदी में, माणिकवर्णी प्रतिमा है।
लगे तीर्थ बड़ा ही प्यारा, अद्भुत इसकी गरिमा है।।
वहां का हर कण नमते हैं-2
वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर को जजते हैं।।6।।

निज आत्मशांति के हेतू, इस तीर्थ की आरति कर लो।
पाना हो पंच परम पद, ''चंदनामती'' प्रभु भज लो।।
मोक्ष की आशा करते हैं-2
वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर को जजते हैं।।7।।

भजन

तर्ज–सपने में.....

प्रभु गर्भकल्याण में बरसे रतन की धारा रे।
कहे धनकुबेर भी, धन्य है भाग्य हमारा रे।।टेक.।।

इक पुण्यशालिनी माँ जब, देखे सोलह सपने तब।
तीर्थंकर सुत को पाती, निज जन्म धन्य कर पाती।।
उस समय पिता का, खुल जाता भण्डारा रे।
कहे धनकुबेर भी, धन्य है भाग्य हमारा रे।। प्रभु...।।1।।

त्रय ज्ञान सहित तीर्थंकर, आते हैं माँ के गरभ जब।
माँ की महिमा बढ़ जाती, वे प्रश्न सहज सुलझातीं।।
अज्ञान तिमिर हर देतीं ज्ञान उजारा रे।
कहे धनकुबेर भी, धन्य है भाग्य हमारा रे।। प्रभु...।।2।।

प्रभु गर्भकल्याण मनाएं, हम भी ऐसा फल पाएं।
अब ऐसी माँ से जन्में, जो देखे सोलह सपने।।
''चंदनामती'' यह उत्सव कितना प्यारा रे।
कहे धनकुबेर भी, धन्य है भाग्य हमारा रे।। प्रभु...।।3।।

भजन

तर्ज–मंदिर में बाज रहे घंटे.....

स्वर्गों में बाज उठे बाजे, इन्द्रों ने मुकुट झुकाए हैं।
जिनवर का जनम हुआ भू पर, धनपति ने रतन लुटाए हैं।। टेक.।।

देवों का परिकर लेकर, इन्द्र-इन्द्राणी आए हैं-2 ।
देखा जो शिशु तीर्थंकर, नेत्र हजार बनाये हैं।
सुन्दरता लखकर प्रभुवर की, फिर भी तृप्ति ना पाये हैं।। जिनवर.....।।1।।

स्वर्गों के वस्त्राभूषण, इन्द्राणी ने पहनाए हैं।
रत्नों के पलने में फिर, जिनवर को सभी झुलाए हैं।।
प्रभु के संग खेलने को, सबके मन ललचाए हैं।। जिनवर.....।।2।।

माता का प्रभु दूध न पीते, फिर भी तो बलशाली हैं।
स्वर्गों से भोजन आता है, महिमा यही निराली है।।
'चंदनामती' उन प्रभुवर के, मात-पिता हर्षाये हैं।। जिनवर.....।।3।।

भजन (बालक्रीड़ा का गीत)

तर्ज - नानी तेरी मोरनी को.....

चलो बच्चों! चलो मिलके खेल खेलेंगे।
अपने प्रभु के साथ मिलके खेल खेलेंगे।।
अच्छे बच्चों! प्यारे बच्चों! सुन्दर अवसर आया है।
तीर्थंकर बालक ने तुमको अपना मित्र बनाया है।।
चलो बच्चों! चलो मिलके खेल खेलेंगे।
अपने प्रभु के साथ मिलके खेल खेलेंगे।।1।।
छुक छुक गाड़ी रेल चलाओ आंख मिचौली खेलो अब।
जिनवर राजा खड़े हैं देखो खेल कबड्डी खेलो अब।।
चलो बच्चों! चलो मिलके खेल खेलेंगे।
अपने प्रभु के साथ मिलके खेल खेलेंगे।।2।।
तीर्थंकर हैं राजकुंवर ये इनकी महिमा न्यारी है।
इन पर तो ''चन्दनामती'' इनकी माता बलिहारी हैं।।
चलो बच्चों! चलो मिलके खेल खेलेंगे।
अपने प्रभु के साथ मिलके खेल खेलेंगे।।3।।

भजन (राजदरबार का गीत)

तर्ज-लिया प्रभू अवतार.....

लगा प्रभू दरबार, जय जयकार जय जयकार जय जयकार।
भरा यहाँ भण्डार, जय जयकार जय जयकार जय जयकार।।

आज खुशी है आज खुशी है, हमें खुशी है तुम्हें खुशी है।
खुशियाँ अपरम्पार, जय जयकार.....।।लगा.....।।1।।

पुष्प और रत्नों की वर्षा, सुरपति करते हरषा-हरषा।
बजे दुन्दुभी सार, जय जयकार.....।।लगा.....।।2।।

इन्द्र ने आकर वासुपूज्य का, राज्यपट्ट अभिषेक किया है।
सबको हर्ष अपार, जय जयकार.....।।लगा.....।।3।।

प्रभु ने राजनीति सिखलाई, धर्मनीति की बात बताई।
धर्म ही जग में सार, जय जयकार.....।।लगा.....।।4।।

आवो हम सब प्रभु गुण गावें, धन्य 'चन्दनामति' हो जावें।
सब जग मंगलकार, जय जयकार.....।।लगा.....।।5।।

भजन (तीर्थंकर वैराग्य का गीत)

तर्ज–जइयो न लला.....

जाएगा कहाँ, मेरा लाल मुझे छोड़ के।
माता-पिता सबसे, ममता को तोड़ के।।टेक.।।

ये सारा वैभव बेटा, तेरी तो माया है।
सारी धरा पर बेटा, तेरी ही छाया है।।
कैसे जाएगा इनसे, मुखड़े को मोड़ के।
जाएगा कहाँ, मेरा लाल मुझे छोड़ के।।1।।

ऐसा क्या सोचा तूने, तुझको क्या हो गया।
मेरा ये राजा बेटा, वैरागी हो गया।।
महलों के सुख को कैसे, जाएगा छोड़ के।
जाएगा कहाँ, मेरा लाल मुझे छोड़ के।।2।।

भजन (आहार गीत)

तर्ज-एक परदेशी.....

तीर्थंकर मुनिराज का आहार हो रहा,
देखो चारों ओर जयजयकार हो रहा।।
महामुनी का प्रथम पारणा, प्रथम बार जब हुआ महल में।।हुआ...।।

पंचाश्चर्य की वृष्टि हुई है, चौके का भोजन अक्षय हुआ है।।
अक्षय....।।
भक्ती में विभोर सब संसार हो रहा,
देखो चारों ओर जयजयकार हो रहा।।प्रभू.....।।1।।

इन्द्र देव सब नगरी में आकर, पंचाश्चर्य की वृष्टि करते।
वृष्टि करते....।।
दान की महिमा को देख देखकर, राजा के पुण्य का वर्णन करते।।वर्णन करते..।।
राजा के महलों में मंगलाचार हो रहा,
देखो चारों ओर जयजयकार हो रहा।।प्रभू.....।।2।।

सब मिलकर इस पुण्य घड़ी में, आहार दान की खुशियाँ मनाओ।
गुरु को आहार दे 'चन्दनामति', सबको खीर का प्रसाद खिलाओ।।
प्रसाद खिलाओ।।
आज कैसा धर्म का प्रचार हो रहा,
देखो चारों ओर जयजयकार हो रहा।।प्रभू.....।।3।।

भजन (ज्ञानकल्याणक गीत)

तर्ज-माई रे माई.....

आओ रे आओ खुशियाँ मनाओ, उत्सव सभी मनावो।
प्रभु को केवलज्ञान हुआ है, समवसरण रचवाओ।।
बोलो रे जय जय जय.....।।

चम्पापुर के उपवन में जब, ज्ञान हुआ था प्रभु को।
इन्द्राज्ञा से धनपति ने, रच डाला समवसरण को।।
नभ में अधर विहार करें वे, दर्शन कर सुख पाओ।
प्रभु को केवलज्ञान हुआ है, समवसरण रचवाओ।।
बोलो रे जय जय जय.....।।1।।

चरण कमल तल स्वर्णकमल की, रचना इन्द्र करे हैं।
सोने में होती सुगंधि है, यह साकार करे हैं।।
उन जिनवर के दर्शन करने, भव्य सभी आ जावो।
प्रभु को केवलज्ञान हुआ है, समवसरण रचवाओ।।
बोलो रे जय जय जय.....।।2।।

बीस हजार हाथ ऊपर है, समवसरण की रचना।
अंधे-लूले-लंगड़े-रोगी, चढ़कर कभी थकें ना।।
यही 'चन्दनामती' प्रभू की, महिमा सब मिल गाओ।
प्रभु को केवलज्ञान हुआ है, समवसरण रचवाओ।।
बोलो रे जय जय जय.....।।3।।

भजन (निर्वाणकल्याणक गीत)

तर्ज-माई रे माई.....

जिनवर का निर्वाण महोत्सव, मिलकर सभी मनाएँ।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।।

कर्म अघाती नाश प्रभू जी, मोक्षधाम में पहुँचे।
तीनलोक के अग्रभाग में, सिद्धशिला पर तिष्ठे।।
अष्टापद से मोक्ष पधारे, ऋषभदेव जिनवर जी।।
तब स्वर्गों से इन्द्रों ने आ, दीप असंख्य जलाए।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।।1।।

ऋषभदेव से महावीर तक, हैं चौबिस तीर्थंकर।
इन सबका उपदेश एक ही, धर्म अहिंसा हितकर।।

जिओ और जीने दो सबको, यह संदेश सुनाएँ।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।।2।।

सिद्धक्षेत्र की भक्ती करके, हम भी सिद्ध बनेंगे।
जब तक सिद्ध नहीं बनते, तब तक प्रभु भक्ति करेंगे।।
सभी 'चन्दनामती' खुशी से, यही भावना भाएँ।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।।1।।

भजन (सामूहिक नृत्य गीत)

तर्ज-रंग बरसे भीगे चुनर वाली.....

रंग छलके ज्ञान गगरिया से रंग छलके.....
हो.....रंग छलके ज्ञान गगरिया से रंग छलके.....हो.....।।टेक.।।

जग को होली का रंग सुहाता-2
तुमको सुहाती ज्ञान गंग, जगत तरसे रंग छलके.....हो.....।।1।।

जग को सुहाती, जयपुर की चुनरिया-2
तुम्हें भाती चरित्र चुनरिया, जो मन हरषे रंग छलके....हो.....।।2।।

जग को सुहाते, रत्नन के गहने-2
तुम्हें भाते ज्ञान के गहने, रतन बरसे रंग छलके.....हो.....।।3।।

जग को सुहाती, विषयां की लाली-2
तुमहो सुहाती जिनवाणी, जगत झलके रंग छलके.....हो....।।4।।

कहे 'चन्दना' सब मिल आओ-2
हम भी सुनें जिनवाणी, ज्ञान बरसे रंग छलके.....हो.....।।5।।

भजन

तर्ज-सपने में .....

जिनवर का महामस्तकाभिषेक निराला है।
क्या सुन्दर लगती पंचामृत की धारा है।।टेक.।।

जब जल की धारा पड़ती, चन्दा के किरण सम लगती।
शीतल हो जाती धरती, पावन होते नरतन भी।।
हैं पुण्यवान वे जो करते जलधारा है।
क्या सुन्दर लगती पंचामृत की धारा है।।1।।

जब दूध से न्वहन करें हम, क्षीरोदधि स्मरण करें हम।
ऊपर से नीचे बहती, तब दुग्धमयी हो धरती।।
प्रभु तन पर कर लो तुम भी दूध की धारा है।
क्या सुन्दर लगती पंचामृत की धारा है।।2।।

जब दही की धारा पड़ती, मोती की लड़ियाँ लगती।
सर्वौषधि कलश ढुराएं, हम तन को स्वस्थ बनाएँ।।
केशर से प्रभु का रंग केशरिया प्यारा है।
क्या सुन्दर लगती पंचामृत की धारा है।।3।।

करो शांतिधारा प्रभु पर, हो जावे शांति धरा पर।
''चंदनामती'' जिन भक्ती, सबके भवकल्मष हरती।।
कलियुग में प्रभु भक्ती ही एक सहारा है।
क्या सुन्दर लगती पंचामृत की धारा है।।4।।

भजन

तर्ज–चलो मिल सब.....

चलो सब मिल यात्रा कर लो, तीर्थयात्रा का फल वर लो।
चौबिस तीर्थंकर की सोलह, जन्मभूमि नम लो।। चलो.।। टेक.।।
ऋषभ-अजित-अभिनंदन-सुमती, अरु अनंत जिनवर।
नगरि अयोध्या में जन्मे, जो तीरथ है शाश्वत।।

अयोध्या को वंदन कर लो,
ऋषभदेव की जन्मभूमि का रूप नया लख लो।। चलो...।।1।।
श्रावस्ती में संभव, कौशाम्बी में पद्मप्रभू।
वाराणसि में श्री सुपार्श्व-पारस प्रभु को वंदूँ।।
चन्द्रपुरि तीरथ को नम लो,
जहाँ चन्द्रप्रभु जी जन्मे वह रज सिर पर धर लो।।चलो...।।2।।

पुष्पदन्त काकन्दी, शीतल भद्दिलपुर जन्मे।
श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर, सिंहपुरी जन्मे।।
तीर्थ चम्पापुर को नम लो,
वासुपूज्य की पंचकल्याणक भूमि इसे समझो।।चलो...।।3।।

कम्पिलजी में विमलनाथ, प्रभु धर्म रतनपुरि में।
हस्तिनापुर में शांति-कुंथु-अर, तीर्थंकर जन्मे।।
चलो मिथिलापुरि को नम लो,
मल्लिनाथ-नमिनाथ जन्मभूमी वंदन कर लो।। चलो...।।4।।

राजगृही में मुनिसुव्रत, नेमी शौरीपुर में।
कुण्डलपुर में चौबिसवें, महावीर प्रभू जन्मे।।
तीर्थ से भवसागर तिर लो,
जिनवर जन्मभूमि दर्शन कर, जन्म सफल कर लो।। चलो...।।5।।

गणिनी ज्ञानमती जी की, प्रेरणा मिली भक्तों।
सभी जन्मभूमी जिनवर की, जल्दी विकसित हों।।
पुण्य का कोष सभी भर लो,
तीर्थ वंदना से हि ''चन्दना'' आत्मशुद्धि कर लो।। चलो...।।6।।

चौबीस तीर्थंकर	प्रथम गणधर	प्रथम गणिनी	प्रथम आहार दाता	प्रथम आहार स्थल	वैराग्य का निमित्त
1. ऋषभदेव	श्री वृषभसेन	आर्यिका ब्राह्मी	राजा श्रेयांस	हस्तिनापुर	नीलांजना के नृत्य को देखते हुए
2. अजितनाथ	श्री सिंहसेन	आर्यिका प्रकुब्जा	राजा ब्रह्म	साकेतनगरी	उल्कापात देखकर
3. संभवनाथ	श्री चारूषेण	आर्यिका धर्मार्या	राजा सुरेन्द्रदत्त	श्रावस्वी	मेघों का विभ्रम देखने से
4. अभिनंदननाथ	श्री वज्रनाभि	आर्यिका मेरुषेणा	राजा इन्द्रदत्त	साकेत नगरी	आकाश में मेघों का महल नष्ट होता देखकर
5. सुमतिनाथ	श्री अमर	आर्यिका अनंतमती	राजा पद्म	सौमनस नगर	संसार के क्षणिक सुखों का चिन्तन कर स्वयं वैराग्य
6. पद्मप्रभ	श्री वज्रचामर	आर्यिका रतिषेणा	राजा सोमदत्त	वर्द्धमान नगर	दरवाजे पर बंधे हुए हाथी की दशा सुनने से उन्हें अपने पूर्व भवों का ज्ञान
7. सुपार्श्वनाथ	श्रीबल	आर्यिका मीनार्या	राजा महेन्द्रदत्त	सोमखेट नगर	ऋतु का परिवर्तन देखकर
8. चन्द्रप्रभु	श्री श्रीदत्त	आर्यिका वरुणा	राजा सोमदत्त	नलिन नगर	दर्पण में अपना मुख देख
9. पुष्पदंतनाथ	श्री विदर्भ	आर्यिका घोषार्या	राजा पुष्पमित्र	शैलपुर	उल्कापात से
10. शीतलनाथ	श्री अनगार	आर्यिका धरणा	राजा पुनर्वसु	अरिष्ट नगर	पाले के समूह (कुहरा) को नष्ट हुआ देखकर
11. श्रेयांसनाथ	श्री कुंथु	आर्यिका धारणा	राजा नंद	सिद्धार्थ नगर	बसन्त ऋतु का परिवर्तन देखकर
12. वासुपूज्य	श्री धर्म	आर्यिका सेनार्या	राजा सुंदर	महानगर	संसार की अस्थिरता का चिन्तन कर
13. विमलनाथ	श्रीमंदर	आर्यिका पद्मा	राजा कनकप्रभ	नंदनपुर	हेमन्तु ऋतु में बर्फ की शोभा को तत्क्षण में विलीन होते हुए देखा
14. अनन्तनाथ	श्री जय	आर्यिका सर्वश्री	राजा विशाख	साकेतपुर	उल्कापात देखकर

चौबीस तीर्थंकर	प्रथम गणधर	प्रथम गणिनी	प्रथम आहार दाता	प्रथम आहार स्थल	वैराग्य का निमित्त
15. धर्मनाथ	श्री अरिष्टसेन	आर्यिका सुव्रता	राजा धन्यषेण	पाटलिपुत्र	उल्कापात देखने से
16. शांतिनाथ	श्री चक्रायुध	आर्यिका हरिषेणा	राजा सुमित्र	मंदिरपुर	दर्पण में अपने दो प्रतिबिम्ब देखकर
17. कुंथुनाथ	श्री स्वयंभू	आर्यिका भाविता	राजा धर्ममित्र	हस्तिनापुर	पूर्व भव का स्मरण हो जाने से
18. अरनाथ	श्री कुंभार्य	आर्यिका यक्षिला	राजा अपराजित	चक्रपुर	मेघों का अकस्मात् विलय होना देखकर
19. मल्लिनाथ	श्री विशाख	आर्यिका बंधुषेणा	राजा नंदिषेण	मिथिलानगरी	पूर्व जन्म के सुन्दर अपराजित विमान का स्मरण करके
20. मुनिसुव्रतनाथ	श्री मल्लि	आर्यिका पुष्पदंता	राजा वृषभसेन	राजगृह	हाथी को अपने पूर्व भव का स्मरण हो गया और उसने प्रभु से संयमासंयम
21. नमिनाथ	श्री सुप्रभार्य	आर्यिका मंगिनी	राजा दत्त	वीरपुर	अपने पूर्व भव के संबंध का स्मरण कर
22. नेमिनाथ	श्री वरदत्त	आर्यिका राजीमती	राजा वरदत्त	द्वारावती	पशुओं के प्रति अत्याचार देखकर
23. पार्श्वनाथ	श्री स्वयंभू	आर्यिका सुलोचना	राजा धन्य	गुल्मखेट	अयोध्या के दूत द्वारा भगवान ऋषभदेव का वर्णन सुनकर
24. महावीर	श्री इन्द्रभूति	आर्यिका चन्दना	राजा वकुल	कौशाम्बी	पूर्वभव का स्मरण होने से